सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, सितम्बर-अक्टूबर, 2013

प्रेम सर्वोच्च शक्ति है।

प्रेम सर्वोच्च शक्ति है। परमेश्वर सर्वोच्च शक्ति है क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। आप कहेंगे कि हम भी अपने बच्चों को प्यार करते हैं। यह सच्चा प्रेम नहीं है बल्कि यह स्वार्थी प्रेम है। परमेश्वर का प्रेम पवित्र है। जब आपमें इस तरह का दिव्य प्रेम होगा, आप बहुत कुछ कर सकते हैं। विश्वास हमारे साधारण प्रेम को दिव्य प्रेम में बदल सकता है। मां का प्रेम भी शारीरिक प्रेम है। पर जब मां ख्रीष्त के साथ प्रेम करती है, तब यह प्रेम अधिक शक्तिशाली होता है। विश्वास, स्वाभाविक प्रेम को शक्तिशाली प्रेम में बदल देता है। जब आप इस तरह के प्रेम से भरकर प्रार्थना करते हैं तब आपको स्वर्ग से शक्ति मिलती है। क्या आपने इस दिव्य शक्ति को पाया है?

प्रेम सर्वोच्च शक्ति है... पृष्ठ 3 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

Zee News

चैनल पर

हर ***रविवार सुबह 6:00 से 6:30*** *बजे*

गुलामी से उत्तराधिकार में

तुम ने गुलामी का आत्मा नहीं पाया है कि फिर भयभीत हो, परन्तु पुत्रों के समान लेपालकपन का आत्मा पाया है, जिस से हम 'हे अब्बा ! हे पिता !' कह कर पुकारते हैं। (रोमियों 8:15)

गुलामी का आत्मा या लेपालकपन का आत्मा - हम ने कैसा आत्मा पाया है ? दासत्व का आत्मा, लोगों को दुबारा बंदी बनाने की कोशिश में हैं। पौलुस इन लोगों को अपने दासत्व से रिहा कराने के प्रयास में है। किसी कारण, हम किसी न किसी गुलामी में रहना पसंद करते है। और कहीं पर यह गुलामी हमें जकड़ लेती है। भय की गुलामी एक आम बात है। और हमारी कल्पनाएँ हमारे उस भय को कई गुणा कर देती हैं। इसलिए हम ऐसी चीजों की कल्पना करते रहते है जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं। यह दासत्व का आत्मा है। लेपालकपन का आत्मा हमें सिंहासन पर अपना ध्यान मग्न करने में सहायता करता है। हमें कहा गया है कि हम मसीह के साथ सह-उत्तराधिकारी है। पवित्रात्मा इस बात की गवाही देता है कि हम मसीह के साथ सह-उत्तराधिकारी है। लेपालकपन का आत्मा 'हे अब्बा ! हे पिता !' कहके पुकारने देता है।

फिर वह उनसे थोड़ा आगे बढ़ा, और भूमि पर गिर कर प्रार्थना करने लगा कि यदि सम्भव हो, तो यह घडी टल जाए। और वह कहने लगा, 'हे अब्बा पिता! तेरे लिए सब कुछ संभव है। यह प्याला मुझ से हटा ले। फिर भी मेरी नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।' (मरकुस 14 :35,36) यह गतसमनी के बगीचे में हुआ था। वहाँ यीशु मसीह पुकार उठे 'हे अब्बा! पिता!' यह पुकार, एक दृढ़ सम्बन्ध का एक अवर्णनीय अभिव्यंजना की तरह दिखता है। ऐसा सिर्फ बहुत भरोसे के साथ तुम अपने पिताजी को कह सकते हो। उन पर दृढ़ विश्वास पूर्वक कहते, 'हे अब्बा! पिता! अब मुझे क्या करना है?' यहाँ यीशु, मनुष्य के अपराधों के प्याले का सामना कर रहे थे। पाप रहित परमेश्वर के पुत्र, स्वयं इस पाप के प्याले का सामने कर रहे है - यह कितना अजीब लम्हा है। इसलिए यह पुकार, यह आह यीशु के हृदय से निकली थी। जो लोग क्रूस को उठाकर नही चलते उनके हृदय में ऐसी पुकार नही होगी। हम अपने आप को दीन नहीं करना चाहते।

अपने पापों को अपना कहके स्वीकारना नही चाहते। हम अपने देश के पाप अपने ऊपर लेना जरूरी नही समझते। रोने लायक अपने देश की हालत देखकर भी हम अपनी आखें बन्द कर लेते है।

हम अपने निजी काम में इतने व्यस्त रहते हैं। और हमारे चारों तरफ दुनिया के प्रति हममें कोई सच्चा बोझ नही। हमारे प्रभु यीशु सेवा में बहुत व्यस्त हो सकते थे। संगठन-संबंधी कामों में एक जोखिम समस्या छिपी है। वो यह कि सबकुछ तुम्हारी मेहनत पर निर्भर रहता है। इसलिए तुम्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। और उस में परमेश्वर का कोई योगदान नही होता। यह एक मानवीय पुनरुद्धारण है। इस में 'हे अब्बा, पिता' नही होता। इस में क्रूस नही होता। और न ही वो लहू के बूंद जो पसीने की बूंद बने। नहीं ! वह केवल शरीरिक परिश्रम और जोश है। क्या हम नही देख रहे हैं ? क्या वही अंश है जो यीशु हमें सिखा रहे है ? आत्माओं को लेकर बोझ और दूसरों के पापों को लेकर बोझ - हम में यही होना चाहिए। अगर वह 'हे अब्बा, पिता !' की पुकार नष्ट हो जाये तो मैं निश्चित कह सकता हूँ कि वहाँ एक विशाल शून्यपन है। और उस शून्य को भरने कोई भी चीज आ सकती है। तुम्हारे विचार, भय, दुष्ट चीजों के प्रति झुकाव, लालसायें, झूठ और अर्ध-सत्य बोलने की वह पुरानी आदत तुम्हारे हृदय में पुनः प्रवाहित होगीं।

मगर यीशु अपने बच्चों को कैसा आत्मा देंगे? वे कहते है, 'मैं तुम्हें दासत्व से छुड़ा लाया हूँ। इसलिए तुम्हारा वह दासत्व का आत्मा, नष्ट हो गया है। अब तुम में लेपालकपन का आत्मा है। ' हमारी हाल ही में शुरू हुई सहभागिता नही है। 65 (अब 76) साल पहले यह सेवकाई प्रारंभ हुई थी। सामान्य परिस्थिति में अब तक हमें उस लेपालकपन के आत्मा में स्थिर हो जाना चाहिए था। क्या हमने उस लेपालकपन के आत्मा में दृढ़, स्थिर, उसी पर अधारित पुष्टिकरण पाया है ? हम ईमानदार बने! यह क्या है ? किस प्रकार की आत्मा ने हमें जकड़ लिया है। परमेश्वर का आत्मा और इस संसार का आत्मा, इन दोनों के बीच बैर है। वह तुम्हें सोचने पर मजबूर करता है - 'मैं जल्दी अमीर कैसे बन पाऊँगा ?' वहाँ गतसमनी कहाँ है ? क्या यह पुकार हम खो बैठे हैं ? हम परमेश्वर के सामने ईमानदार रहें और अर्ध-सत्य न बोले।

सत्य का आत्मा, परमेश्वर का आत्मा है। और लेपालकपन का आत्मा, सत्य के आत्मा की गठरी है। अगर इस सत्य का सामना नही कर पायें तो यह एक भयानक विषय है। सत्य किसी को नही छोड़ता। मगर क्या तुम्हारे लिए सत्य भला है ? सत्य जानने के लिए, तुम्हें कुछ परीक्षाओं से गुजरना होगा। और सत्य सब को कड़वा लगता है। मैंने कई देशों में यही प्रचार किया कि अगर फैलोशिप में बार-बार संजीवन नही होता, तो यह फैलोशिप मुरदा बन जायेगी। कम से कम हर पाँच या दस सालों में जागृति होना जरूरी है। दस सालों में बच्चे नव युवक बन जाते है। और अगर वे बेदारी के बारे में नही जानेंगे, सत्य के अनुसार नही चलेंगे तो, उनके लिए कोई अवसर नही रहेगा। पन्द्रह साल का युवक, व्यवसाय के बाजार में एक नया सदस्य बनेगा। जब वह उस में प्रवेश करेगा तो उसकी जेब पैसों से भर जाएगी। मगर परमेश्वर के राज्य को पहला स्थान दे, उसने यह कभी नही सीखा। 'अब्बा, पिता' कहके उसने कभी नही पुकारा। वह इस दुनिया के लिए एक धोखे की बात के समान है। संजीवन की आवश्यकता को क्या तुम देख पा रहे हो ? संजीवन के लिए तुम्हारे हृदय में यह पुकार स्वाभाविक होनी चाहीए। जोर देकर या प्रयास करके तुम यह पुकार नही प्राप्त कर पाओगे।

चार्ल्स फिन्नी एक व्यापारी के बारे में बात किया

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

करते थे। जब वे अपने कारोबार से लौटते और तुरन्त प्रार्थना सभा में प्रार्थना के आत्मा में मग्न होते। श्रीमान फिन्नी कहते, 'यह कितना व्यस्त आदमी है और उन पर कितनी जिम्मेवारी है। फिर भी वे अपने प्रार्थना के आत्मा को कैसे कायम रख पाते हैं?' एक बार फिन्नी उनके घर में मेहमान बन कर रहे। और इस तरह एक दिन, जब फिन्नी के बच्चे को दूध या कुछ चीज की जरूरत थी तो वे सोने के कक्ष से नीचे रसोईघर की ओर आये। तब रात के लगभग तीन बजे थे। और उन्होंने देखा कि वह व्यवसायी परमेश्वर के सान्निध्य, प्रार्थना में खोया हुआ था। उन्होंने कहा, 'अब मै जानता हूँ, किस तरह यह आदमी प्रार्थना के आत्मा में रहता है। ' उस आदमी ने कहा, 'परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संपर्क रखने के लिए, मेरे पास एक ही मार्ग है। मैं आधी रात में उठकर, परमेश्वर के साथ अपना वक्त गुजारता हूँ। ' ऐसा करने में, कितने अनुशासन की जरूरत है, तुम जानते हो।

तुम समझ सकते हो कि ऐसे लोगों में हे अब्बा, पिता कहने की पुकार रहती है। वे इस संसार में तो हैं मगर इस संसार के नही हैं। ऐसा लगता है कि संसार उनमें कभी प्रवेश नही कर पाता। प्रभु यीशु ने यह दो बार कहा, 'तुम संसार के नही हो, जैसे मैं संसार का नही हूँ। ' उससे मुझे एक जोरदार बढ़ावा मिलता है। हम सिद्धता के बारे में बाते करते आ रहे है; हवा में बाते करने से कोई फायदा नहीः 'अतः तुम सिद्ध बनो, जैसा कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।'

वास्तव में, जब एक महत्व पूर्ण निर्णय लेने की घड़ी आती है या संकट के समय में, हम नासमझ बच्चों के समान है। जैसा मन मे आया, वैसे ही हम बोलते हैं। अपने भय की अभिव्यक्त होने देते है। और हम सिर्फ कहते है, 'मेरे इच्छानुसार हो।' यह लेपालकपन का आत्मा नही है और ना ही सत्य का आत्मा। 'तेरी इच्छा पूरी हो, मेरी नही।' लेपालकपन का आत्मा तुमको यह पुकारने पर मजबूर करता है। यह बहुत कठिन और थकाऊ हो सकता है। यह तुम को मार भी सकता है। मगर यह लेपालकपन का आत्मा तुमको, परमेश्वर की इच्छा में एक दृढ़ संस्थापन देता है। और परमेश्वर की इच्छा के प्रति एक कभी ना झुकने वाली (सुपुर्दगी) वचनबद्धता देता है।

परमेश्वर के पास हमारे लिए एक जमा पूंजी है। वह क्या है? परमेश्वर का उत्तराधिकारी ! क्या तुम उसको हासिल करने दौड़ रहे हो? क्या हम में लेपालकपन का आत्मा है? मसीह का आत्मा, परमेश्वर के पुत्र का आत्मा, हम में यह पुकारने भेजा जायेगा, हे अब्बा, पिता! क्या यह पुकार हम में से निकल रही है? जब तुम में यह पुकार हो तो, बाकी सब पुकार और दबाव बाध्यता तुमसे निकाल दिया जायेगा। क्योंकि तुम एक पुत्र हो और तुम्हारा स्थान यीशु के साथ है। तुम्हारी पुकार, यीशु के हृदय से निकलने वाली पुकार होगी। अनेक साल मसीह बनकर जीने के बाद, हमारी परिपक्वता कहाँ है? क्या प्रकाशन पाने के बाद, हमें परमेश्वर के साथ-साथ स्वर्ग सीमाओं में चलना चाहिए। परमेश्वर हमारी सहायता करें!

- जोशुआ दानिय्येल।

प्रेम सर्वोच्च शक्ति है... पृष्ठ 1 से

यदि आप दस लोगों को प्रेम करने का प्रयत्न करते हैं तो आपको शक्ति मिलेगी। यदि आप दस हजार लोगों को प्रेम करेंगे आप कभी बिमार नहीं पड़ेंगे। परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र संसार को दे दिया कि वह हमारे लिये मरे। सबसे निकट की जगह स्वर्ग, हमारा घर है क्योंकि प्रेम वहां है। बच्चे माता-पिता को प्रेम करते हैं। पति-पत्नी एक दूसरे से प्रेम करते है, इत्यादि। स्वर्ग एक सुन्दर जगह है जो प्रेम से बना है। जब ख्रीष्ट पति और पत्नी के साथ हैं तब उनका प्रेम सच्चा प्रेम होगा। उनके बीच झगड़ा नहीं होगा। बिना ख्रीष्ट के आप में प्रेम हो सकता है किन्तु वह केवल पाश्विक प्रेम या प्रकृति प्रेम होगा। ख्रीष्ट हमें नया प्रेम देंगे।

पवित्र आत्मा आपको पाप से दूर रखता है। संत पौलुस ने महिमामय प्रेम के बारे में लिखा है और प्रेम के आठ गुणों का उल्लेख किया है। जो पहले कुरन्थियों के तेरहवें अध्याय में वर्णित है। उनमें से एक है। "प्रेम अधर्म से आनन्दित नहीं होता है। " जब आप एक सच्चे मसीही बन जाते हैं। ख्रीष्ट आपको नया स्वभाव देंगे। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकते हैं।

जहां सच्चा प्रेम है वहां एकता होगी। क्या आप अपने पड़ोसी से प्रेम करते हैं ? ख्रीष्ट आपको सच्चा प्रेम देंगे। जिस पल आपके अन्दर क्रोध और घृणा प्रवेश करता है आप किसी प्रकार के रोग से पीड़ित होंगे। लोगों ने

यीशु को क्रूस पर चढ़ाया। उन्होंने क्रूस पर से उन्हें क्षमा किया। यदि आप क्रोधित होते हैं आपके पेट में गड़बड़ी उत्पन्न होगी। लोग जो प्रतिशोध और घृणा की आत्मा से भरे रहते हैं वे जल्दी मर जाते हैं। मनुष्यों में कुछ प्रकार का स्वार्थी प्रेम होता है जो पशु सरीखा प्रेम होता है। आप कहते हैं, "मैं और मेरा परिवार।" जब ख्रीष्ट आपके जीवन में आते हैं वे इस स्वाभाविक, स्वार्थी प्रेम को दैविक प्रेम में बदल देते हैं। आपके अन्दर एक परिवर्त्तन आयेगा, तब आपका हृदय दूसरों के लिये बोझ से भरा होगा। इस प्रकार जब आप अपने पड़ोसी को प्रेम करना शुरू करेंगे तब आपका परिवार आशिषित होगा।

बहुत लोग कहते हैं कि स्वर्ग कहीं दूर है। नहीं, स्वर्ग का आरंभ हमारे घर से होता है। जब आपका परिवर्त्तन होता है, परमेश्वर आपके शुद्ध हृदय को प्रेम से भरते हैं। यदि एक चर्च में एक दर्जन लोग हैं और उनके हृदय में दैविक प्रेम है वह चर्च आशिषित होगा। क्या आपके परिवार में सच्चा प्रेम है? क्या आप किसी के विरुद्ध कुछ सोच रहे है ? संत पौलुस हमें दूसरों को प्रेम करना सिखाते हैं। सभी जगह प्रेम होना चाहिये। हमें विलाप करना चाहिये कि हम अपने पड़ोसियों, रिश्तेदारों और दूसरों से प्रेम नहीं करते हैं। क्यों दूसरो को घृणा करें ? "और जौभी मुझे नबूवत करने का वरदान मिला है और मैं प्रेम न करूं। मैं कुछ भी नहीं। " यही मसीही जीवन की शिक्षा है। जब आप दूसरों को प्रेम करेंगे, आप आशिष बनेंगे और आपका जीवन शक्तिशाली बनेगा। जब आप बिमार लोगों को स्पर्श करेंगे वे चंगाई पायेंगे। वास्तव में हमारे अन्दर किस बात की कमी है? वह है प्रेम, न कि पैसा। पर क्यों हम इसप्रकार के प्रेम का अनुभव न करें? जब हमारे हृदय में अशुद्धता है, हम इस प्रकार के प्रेम का अनुभव नहीं कर सकते हैं।

वे जो दूसरों से प्रेम करते हैं वे परमेश्वर में निवास करते हैं। क्या आपने एक शुद्ध हृदय पाया है? यदि आप परिवर्त्तित हुए हैं और बाईबल का अध्ययन करते हैं तब आपके अन्दर दैविक प्रेम होगा। प्रेम एक असीमित शक्ति है। आईये हम एक दूसरे से प्रेम करें। मसीही शिक्षा का अंत प्रेम से होता है।

युसुफ प्रेम से भरा था उसने अपने शत्रुओं का चुम्बन किया। उसने मिस्र जैसे दुष्ट मूर्तिपूजक देश को आशिष के स्थान में बदल दिया। दानियेल प्रेम से भरा था। उसने अपने लोगों के लिये जो बंधुवाई में थे प्रार्थना की कि वे यहूदी बेबीलोन से यरुशलेम को वापस लौट जायें।

सच्चा प्रेम, ख्रीष्ट को, दूसरों को देते हैं यानी आप ख्रीष्ट के विषय दूसरों को बतायेंगे। स्वर्गीय प्रेम का सबसे उत्तम उपहार जो पृथ्वी पर दिया गया है, वह यीशु ख्रीष्ट है। आप अपने स्वजनों को सुसमाचार देंगे जिन्हें आप प्रेम करते हैं। उद्धारकर्ता यीशु के बिना कोई सच्ची शांति और प्रेम नहीं है।

- एन. दानियेल

सत्य की परख!

दुराचारी तो काट डाले जाएंगे, परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते है वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे। (भजन संहिता 37:9)

जीवित परमेश्वर की विश्वासनीयता

क्या आप असली और जीवित परमेश्वर पर विश्वास करते हो ? अगर है, तो उनके विश्वासनीयता पर, क्या आप कभी शक करते हो? जार्ज मुल्लर एक ऐसा जन था जिन्होंने परमेश्वर को, अपने वचन पर मान लेना सीखा था। 'अपनी सम्पत्ती बेचकर दान कर दो।' (लूका 12 :33) और 'पारस्परिक प्रेम के अतिरिक्त अन्य किसी विषय में किसी के ऋणी न बनो।' (रोमियों 13 :8) – ऐसे आदेशों का उन्होंने पालन किया था। सन 1834 में परमेश्वर की असलीयत और विश्वासनीयता को साबित करने वे निकल पड़े – बिना किसी से पैसों की माँग किये या उधार लिये, सिर्फ प्रार्थना और विश्वास के बल पर उन्होंने ब्रिस्टल में, अनाथ बच्चों के लिए एक घर खोला था। और फिर उसको आगे भी बढ़ाया था। मुल्लर की यह अपेक्षा ना थी कि

परमेश्वर उनके लिए सोना और चांदी उप्तन्न करें। मगर वह जानते थे कि प्रभु, परमेश्वर के दिये हुए, काम में मदद करने के लिए लोगों के मनों को वह जरूर प्रभावित करेंगे। 'तू अपना मुंह पूरा खोल और मैं उसे भर दूँगा। ' (भजन संहिता 81 :10) मुल्लर ने अनाथालय के काम के लिए, इसी प्रतिज्ञा को लागू करने की आत्मिक अगुवाई पाई।

सन 1845, में परमेश्वर ने कई विषयों के जरिये यह स्पष्ट किया था कि एक अनाथालय का निर्माण करने का समय आया है। तीन सौ बच्चों को रखने लायक एक जगह की जरूरत होगी। ब्रिस्टल में, इमारतों के लिए, एक बड़ा सा मैदान और खेती के लिए छोटे से खेत की आवश्यकता होगी। उस के लिए खर्चा कम से कम 10000 पाउँड होगा। यह रकम पाये बिना, मुल्लर किसी भी तरह की जिम्मेवारी नहीं लेना चाहता था।

मुल्लर के इस विषय में प्रार्थना शुरु करने के छत्तीस दिन बाद, आनाथ घर बनाने के लिए, 10000 पाउँड पाया। उनको मिलने वाली भेंट में, यह एक ही दफा मिलने वाली बहुत बड़ी रकम थी। छत्तीस दिन प्रभु की खोज में बिताने के बाद, सारी सामिग्री इकट्ठा होने के बाद, अंततः इमारत बनाने का काम शुरू हो गया।

नवम्बर का महीना था। एक नये घर में, एक बॉइलर से पानी टपकना शुरू हुआ। उसकी मरम्मत करनी हो, तो बच्चों को ठंड सहनी होगी। क्योंकि उनको ठीक करते समय आग को बुझाना पड़ेगा। मरम्मत करने का दिन तय करने के बाद, उसी दिन उत्तर दिशा से अत्यंत शीतल हवा चलने लगी। अब मुल्लर ने परमेश्वर से इन दो चीजों की मांग कीः उत्तर दिशा से चलने वाली हवा को दक्षिणी हवा में बदले और कारीगरों को काम करने की लगन दे। उन्होंने याद किया कि किस तरह पुराने नियम में, नहेमायाह ने सिर्फ बावन दिनों में ही क्या हासिल किया था, जब वे यरूशलेम के शहरपानाह की मरम्मत कर रहा था। वह इसलिए था कि 'उन लोगों ने पूरी लगन से काम किया था। ' (नहेमायाह 4:6)

मरम्मत का काम शुरू करने की सुबह दक्षिण दिशा से हवा चलने लगी। इसलिए गरमाइश की जरूरत ना थी। ईटों को निकालकर पानी टपकने की जगह ढूढ़ी गई और मरम्मत करने वाले काम में लग गये। लगभग शाम साढ़े आठ बजे, काम कहां तक पहुँचा यह जाँचने केलए उस मरम्मत करनेवाली संस्था के मैनेजर आये। 'मेरे आदमी आज देर तक काम करेंगे और कल सुबह बहुत जल्दी आयेंगे। ' उस प्रबन्धक ने कहा। 'सर! इस के बदले हम पूरी रात काम करने के लिए हम सब तैयार है। ' कारीगरों के मुखिया ने कहा। अगली सुबह तक बॉइलर का मरम्मत कर दी गई।। मरम्मत के लिए जिस दिवार को तोड़ा गया, तीस घंटों में ही उसका पुनः निर्माण किया गया। बॉइलर में अब आग जलने लगी। यह सारा समय मन्द दक्षिणी हवा चलती ही रही और गरमाईश की जरूरत ना पड़ी। परमेश्वर ने इस तरह, मुल्लर की प्रार्थना के दोनों अंशों का उत्तर दिया।

प्रार्थना में मुल्लर के सिद्धांत क्या थे ? वे जानते थे कि उनका जवाब पाने के लिए, परमेश्वर के सिद्ध पुत्र – प्रभु यीशु की विशेषता और योग्यता, के बल पर अपना निवेदन पेश करे। अपनी स्वयं की विशेषता और योग्यता पर वह निर्भर नहीं कर सकते।

परमेश्वर पर विश्वास करने का मतलब, प्रार्थना और विश्वास के जरिया, सिर्फ पैसों को पाना नहीं, ब ल्कि वह उस से बहुत बढ़कर है। मुल्लर की यह इच्छा रही कि उनके विश्वास का फैलाव हर विषय में फैले। परमेश्वर के वचन का अध्ययन और उस पर मनन करना, सच्चा मन और शुद्ध विवेक बनाये रखना, विश्वास की परीक्षाओं को स्वीकार करते, परमेश्वर को अपना काम करने देना – इन सब बातों के आचरण में मुल्लर ने अपना विश्वास मजबूत होते पाया। काश! आप के साथ भी वैसे ही हो!

वह आदमी जो मेरे लिए मरा था।

कैलिफोरनिया के खनि ज प्रदेश में, मिट्टी से बनी एक-कमरा वाली एक कोठरी खड़ी थी। उस में, मृत्यु शैय्या पर पड़ा हुआ था, कठोर और सख्त मिज़ाजी एक आदमी। श्रीमती बारनी, पहाडों के पार, पहली बार उस आदमी से मिलने गई। जब उन्होंने यीशु और उनकी मृत्यु के बारे में बात करने की कोशिश की, तब उनको – गालियों का सामना करना पड़ा। 'वह सब कुछ झूठ है, ' खनिक ने कहा, 'कोई, कभी किसी के लिए नहीं मरा। ' ततपश्चात, जब भी उससे मिलने वह जाती, कुत्तों से भी कम आभार प्रकट करते, वह पेश आता।

एक रात, उसे यह लगा कि उसने मरते खनिक की तरफ उचित ध्यान नहीं दिया , इस बात

से चिंतित, श्रीमत बारनी ने प्रार्थना की, 'ओह मसीह, एक मनुष्य के आत्मा का क्या मोल है, सिर्फ एक झलक ही सही, पर मुझे दिखाओ।' घुटनों के बल बैठी वह इस तरह घंटों प्रार्थना कर रही थी, तब ही कलवरी (सूली पा लटकाने की जगह) – जहाँ मसीह मरे है, एक सच्चाई बन कर उसके सामने आई। बाद में उसने, अपने पति से कहा, 'प्रभु उस आदमी को बचाने वाले है।'

अगली सुबह, क्षीमती बारनी के साथ, उनकी एक पड़ोसी और उसकी बेटी, 'मामी' भी उसके साथ गये। जब वह खनिक ने उस नन्ही बच्ची की हँसी सुनी, तो पूरे दिल से उस बच्ची को देखने की इच्छा जाहिर की। 'मेरी भी एक नन्ही बेटी थी। वह चल बसी। उसका नाम 'मामी' है। शायद ही कोई मेरी परवाह करता था। मगर वह मेरा बड़ा ध्यान रखती थी। सोचो, अगर वह जिन्दा होती तो मैं अलग ही होता। जब से वह मर गई है, मैं सब से घृणा करने लगा हूँ।' अपनी पत्नी और माँ के प्रति उसमें कड़ुवाहट भरी थी। मगर उस के विपरीत, अपनी उस लड़की से वह गहरा प्रेम करता था।

'प्यारे प्रभु यह नहीं चाहते थे कि उन लोगों की तरह, वह बच्ची भी बने। तुमसे अधिक, परमेश्वर उससे प्रेम करते थे। इसलिए वो, उसे ले गये। ' श्रीमती बरनी ने कहा और पूछा, 'क्या तुम नहीं चाहते हो कि उसको दुबारा देखो?' तब उन्होंने क्रूस पर मरे यीशु की मृत्यु के बारे में बताया। और फिर उस मरते खनिक के लिए मामी ने प्रार्थना कीः 'प्यारे यीशु, यह आदमी बीमार है। उसने अपनी नन्ही बच्ची को खोया है। इससे वह बहुत दुखी है। उसके लिए मुझे बहुत खेद है। वह भी बहुत खेदित है। क्या आप उसकी मदद नहीं करेंगे और उनको दिखायेंगे कि वह कहाँ अपनी बच्ची से मिल सकते है। कृपया ऐसा कीजिए। आमीन।'

वह वृद्ध आदमी कहता गया, 'इस बारे में उनको और आगे बताते रहो। उनको सब कुछ बताओ। ' वह गहरे रूप से पश्चाताप करने लगा। इस तरह तीन दिन के बाद, वह सबसे मुँह फेर कर, 'जो आदमी मेरे लिए मरा', उसकी तरफ फिरा।

कुछ समय बाद, उस कोठरी में खनिक और कारखानों में काम करने वाले लड़कों के लिए एक सभा रखी गयी। 'लड़कों,' मर रहे उस खनिक ने कहा, 'तुम लोग जानते हो कि किस तरह जलद्वार बक्सों पर पानी बहाने से कैसे मिट्टी सब बह जाती है और पीछे सोना छोड़ जाती है। ठीक वैसे ही, उस आदमी (यीशु) का लहू मेरे ऊपर से बहा ; और वह धारा लगभग सब कुछ बहा ले गया। सिर्फ इतना छोड़ दिया कि मैं अपनी मामी को देख पाऊ और उस आदमी को भी, जो मेरे लिए मरा। ओह ! बच्चों, क्या तुम उनसे प्यार नहीं करोगे?'

कुछ दिनों बाद श्रीमती बारनी एक दिन जब विदा लेकर जाने वाली थी, वह समझ गई कि उसका अंत नजदीक है।

'आज रात मैं आपसे क्या कहूँ जैक?' उसने पूछा।

'सिर्फ शुभ रात्री !' उसने कहा। 'जब हम दुबारा मिलेंगे, तो क्या कहोगे?'

'ऊपर वहाँ, मैं कहूँगा – शुभ दिन।'

उस रात उस खनिक की मौत हो गई। मगर उसके अंतिम शब्द थे: 'उनसे (श्रीमती बारनी) कहना, मैं उस आदमी को देखने जा रहा हूँ, जो मेरे लिए मरा।'

यीशु द्वारा चंगी हुई एक अपाहिज

एक वाणी:

'मैं मरना चाहती हूँ। ' यह निडर और ईमानदार शब्द है। 'मैं अब और जीना नहीं चाहती। ' दो वर्ष की आयु से अपाहिज और अब अपने प्रिय पिताजी को खोई, अपनी निराशा को व्यक्त करती गुलशन – जो पाकिस्तान की एक मुसलमान लड़की है। रात तीन बजने की अल्पावधि के बाद की बात है।

अपनी व्यथा और दर्द में, गुलशन ने एक विनम्र आवाज को उत्तर देते सुना: 'मैं तुमको मरने नहीं दूँगा, मैं तुमको जीवित रखूँगा।' 'मझे जीवित रखने से क्या लाभ?' गुलशन ने पूछा। 'मेरे पिताजी को मुझ से दूर किया और मेरे लिए कोई आशा नही छोड़ी ...। ' मगर दुबारा उस आवाज ने कहा : 'अंधों को आँख किसने दी ? बीमारों को किसने चंगा किया? कोढ़ियों को किसने ठीक किया और मरे हुओं को किसने जिंदा किया? मैं ही यीशु हूँ ... मरियम का पुत्र। कुरान में सुरा मरियम में मेरे बारे में पढ़ो।'

गुलशन ने उस आवाज की बात मान ली। कुरान में, चंगाई करने वाले यीशु के बारे में जब वह पढ़ रही थी, उसमें एक विश्वास बढ़ता गया कि वह जिन्दा है और

उसे चंगा कर सकते है। दिन में कई बार, उसे स्वस्थ करने के लिए, यीशु से प्रार्थना करना शुरु किया। जितना अधिक वह प्रार्थना की उतना अधिक वह उस व्यक्ति की तरफ आकर्षित होती गई, जिस में रोगियों को चंगा करने और मृतकों को जिलाने का सामर्थ्य है। और इस तरह का दावा मुहम्मद ने कभी नहीं की।

एक सामना:

एक रात तीन बजे, रोज की तरह, अपनी चंगाई के लिए मन में प्रार्थना करती गुलशन नींद से उठ गई। मगर फिर वह रुक गई : 'लम्बे समय से मैं इस तरह कर रही हूँ मगर अ ब भी मैं अपाहिज ही हूँ। ' अंततः दर्द से भरी वह पुकार उठी : 'अगर मुझे स्वस्थ कर सकते हो तो करो। नहीं तो मुझे बताओ। ' उसके पश्चात जो कुछ हुआ उसे शब्दों में बयान करना मुमकिन नही।

रोशनी - अत्यंत उज्जवल रोशनी से वह शयन कक्ष भर गया। दिन के उजाले को भी मात कर देनेवाली रोशनी थी। बारह लम्बे-लम्बे चोगे पहिने रूप सामने खड़े है और उनसे भी अत्यंत अधिक प्रदीप्त तेरहवाँ आकार। गुलशन प्रार्थना करने लगी औऱ वे कौन है जानने की विनती की। एक आवाज ने बात की: 'उठो, यही मार्ग है जिसे तुम खोज रही हो। मैं मरियम का पुत्र यीशु हूँ, जिसको तुम प्रार्थना कर रही थी। और अब मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ। तुम उठकर मेरे पास आओ।'

तीन बार यीशु ने उसे आदेश दिया – एक अपाहिज गुलशन को –'उठकर खड़ी हो जाओ और चलकर मेरे पास आओ। ' उसके पैरों में शक्ति आने लगी। गुलशन ना केवल उठ खड़ी हुई बल्की दौड़ कर यीशु के पैरों पर जा गिरी और उस स्वच्छ रोशनी से ढक गई।

यीशु ने अपना हाथ बढ़ाकर गुलशन के सिर पर रखा। उनकी हथेली में छेद से निकलने वाली किरणों का प्रकाश उस के वस्त्र पर पड़ा: 'मैं यीशु हूँ, मैं इम्मानुएल हूँ। मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ। मैं जीवित रहने वाला हूँ। शीघ्र ही इस संसार में वापस आने वाला हूँ। देखो ! आज से तुम मेरी गवाह हो। तुमने अभी आँखों से जो कुछ देखा उसे मेरी प्रजा तक पहुँचाओ। आज से मेरे जन तुम्हारे जन हो गए है। ' यीशु ने गुलशन को एक नई प्रार्थना करने का निर्देशन दिया;

'हे मेरे पिता, तू जो स्वर्ग में है;
तेरा नाम पवित्र माना जाए।
तेरा राज्य आए ;
तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में
पूरी होती है,
वैसी पृथ्वी पर भी हो।
हमारी दिन भर की रोटी
आज हमें दे।
और जिस प्रकार हम ने
अपने अपराधियों को क्षमा किया है,
वैसे ही तू भी हमारे
अपराधों को क्षमा कर।
और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु
बुराई से बचा
क्योंकि राज्य, पराक्रम और महिमा
सदा तेरी ही है।' आमीन।

वहाँ यीशु के चरणों में, परमेश्वर के पुत्र के साथ गुलशन का एक सजीव मुलाकात हुई। उसके हाथ में ताकत आई मगर वह हाथ पूर्ण रूप से ठीक नहीं था। 'पूरी तरह से इसे, आप क्यों नहीं ठीक करते ?' उसने पूछा। 'तुम्हें मेरे लिए एक गवाह बनकर रहना है। ' यीशु ने जवाब दिया।

आगे बढ़ना:

यीशु का गवाह बनने का निर्णय, महंगा है। गुलशन ने इस प्रश्न को लेकर प्रार्थना करना शुरू किया कि उसके जन कौन है। वे कहाँ है। कैसे उन लोगों के पास वह प हुँच सकती है जब की, उस के अप ने परिवार ने प्रतिबंध लगाया है। उसका जवाब एक आवाज के रूप में आया: 'यदि तुम अपने घरवालों से डरती हो, तो मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। मेरे जनों तक पहुँचने के लिए तु मको, मेरे प्रति विश्वसनीय रहना होगा।'

जब गुलशन ने नि डर हो एक न ये नियम का प्रति को हासिल किया, उसने अपनी आत्मिक भूख मिटाने की रोटी पाई, उसके अमूल्य पन्नों में परमेश्वर, यीशु के रूप में प्रकट हुए। किसी भी जंतु का लहू, गुलशन के पाप को शुद्ध नहीं कर सकता, सिर्फ यीशु का बलि चढ़ाया गया देह, उस परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने का मार्ग, हमारे लिए खोल सकता है; 'जहाँ वे पापों के बदले सदा के लिए एक ही बलिदान चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा है। ' (इब्रानियों 10:12)

(- पर्दा फट गया – जैसी तेलमा शांगस्टर से कही गई, देखें।)